एडोमीट्रियोसिस संगठन

शिक्षा - समर्थन - शोध

एण्डोमीट्रियोसिस क्या है ?

एण्डोमीट्रियोसिस एक उलझन–भरी बीमारी है जो महिलाओं को प्रजनन के वर्षों में होती है इस बीमारी का नाम ''एण्डोमीट्रियम'' शब्द से बना है। एण्डोमीट्रियम, एक टिशू यानि उत्तक है जिससे बच्चेदानी के भीतर की परत बनी होती है। यह परत महावारी के चक्र के साथ हर महिने बनती है और टूटती है। एण्डोमीट्रियोसिस नामक बीमारी में एण्डोमीट्रियम के समान टिशू बच्चेदानी के बाहर शरीर के अन्य अंगों में रसौली, गांठ, प्रतिरोपण व घाव के रूप में बढ़ता है जिससे दर्द, बांझपन व अन्य समस्याएं उत्पन्न होती हैं।

एण्डोमीट्रियम का यह विकृत विकास आमतौर पर पेट के विभिन्न अंगों, जैसे अण्डाशय, डिम्बवाही नाली (अण्डाशय को बच्चेदानी से जोड़ने वाली नाली), बच्चेदानी को सहारा देने वाला स्नायु यानि बन्ध, मलाशय व योनि के बीच का स्थान, बच्चेदानी की बाहरी सतह व श्रेणी की भीतरी परत में पाया जाता है। कई बार यह विकृत विकास पेट की शल्य चिकित्सा के घाव, आंतों के ऊपर या मलाशय के भीतर, मूत्राशय, योनि या योनि के बाहरी अंगों में पाया जाता है। एण्डोमीट्रियम की यह वृद्धि पेट के बाहर, फेफड़ों में, बाजू, जंघा व अन्य अंगों में भी देखी गयी है। यद्यपि ऐसा काफी कम महिलाओं में होता है।

एण्डोमीट्रियम की यह वृद्धि सामान्यत: घातक यानि कैंसर नहीं होती। यह सामान्य टिशू यानि उत्तक हैं परन्तु अपनी सामान्य जगह से हटकर बढ़ रहे होते हैं। (यद्यपि हाल के दशकों में एण्डोमीट्रियोसिस के मरीजों में कैंसर भी अधिक संख्या में सामने आने लगा है।) बच्चेदानी की परत की भांति, यह एण्डोमीट्रियम वृद्धि की महावारी–चक्र से जुड़े हॉरमोन से प्रभावित होती है। हर महीने इन गांठों/रसौलियों में उत्तक बनते हैं, टूटते हैं/ झड़ते हैं और इससे रक्तस्राव होता है।

लेकिन इन टूटते झड़ते उत्तकों को शरीर से बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं होता जैसा कि बच्चेदानी के भीतर हर महीने बनने झड़ने वाले उत्तकों के लिए होता है। इस कारण भीतरी रक्तस्राव का होना, झड़ने वाले उत्तकों व रक्त का विकार पैदा होना, आसपास की जगह में सूजन और दागदार उत्तक का बनना देखा गया है। उत्तक की वृद्धि के स्थान के आधार पर इस बीमारी से कुछ अन्य जटिलताएं पैदा हो जाती हैं जैसे रसौली का फटना। (इससे बीमारी नए अंगों में फैल सकती है।), अंगों का एक दूसरे से चिपक जाना, आंतों में रक्तस्राव या अवरोध (यदि यह वृद्धि आंतों के भीतर या निकट है), मूत्राशय के कार्य में बाधा (यदि वृद्धि मूत्राशय के भीतर या ऊपर है), आदि। समय के साथ बीमारी के लक्षण बिगड़ते जाते हैं हालांकि कुछ मरीजों में लक्षण दबने या फिर उभर आने के चक्र के नमूने देखने को मिले हैं।

लक्षण

एण्डोमीट्रियोसिस का सबसे आम लक्षण है महावारी से पहले व महावारी के दौरान दर्द (सामान्यत: महावारी की ''आम'' ऐंठन से कहीं ज्यादा दर्द), संभोग के दौरान या बाद में दर्द, बांझपन और भारी या अनियमित रक्तस्राव। अन्य लक्षण हैं थकावट, महावारी के दिनों में : शौच के साथ दर्द, पीठ के निचले भाग में दर्द, दस्त और/या कब्ज और पेट की अन्य खराबियां। एण्डोमीट्रियोसिस से ग्रसित कुछ महिलाओं में कोई लक्षण नहीं होते। इस बीमारी में 30–40 प्रतिशत महिलाओं में बांझपन आ जाता है जो कि बीमारी के बढ़ने का आम परिणाम है।

दर्द की मात्रा, टिशू की वृद्धि की मात्रा या आकार के अनुपात में हो ऐसा आवश्यक नहीं है। छोटे आकार की घाव वृद्धियां प्रोस्टाग्लैन्डिन्स बनाने में अधिक सक्रिय होती हैं। प्रोस्टाग्लैन्डिन्स नामक पदार्थ पूरे शरीर में बनता है, शरीर के अनेक कार्यकलापों से जुड़ा हुआ है और एण्डोमीट्रियोसिस के बहुत से लक्षणों का कारण समझा जाता है। छोटी वृद्धियों में मिलने वाले लक्षण उनकी सक्रियता के रहते समझे जा सकते हैं।

एण्डोमीट्रियोसिस के कारणों के सिद्धान्त

एण्डोमीट्रियोसिस के कारण की कोई जानकारी नहीं है। कई सिद्धान्त बताये गए हैं लेकिन इनमें से एक भी ऐसा नहीं है जो इस बीमारी के सभी रोगियों की व्याख्या कर सके। एक सिद्धान्त है ''प्रतिगामी महावारी'' या ''अन्तरनाली स्थानान्तरण सिद्धान्त''। इसके अनुसार महावारी के दौरान बच्चेदानी से निकले कुछ उत्तक डिम्बवाही नाली के द्वारा वापिस शरीर के भीतर जाकर पेट में प्रतिरोपित हो जाते हैं और बढ़ने लगते हैं। एण्डोमीट्रियोसिस के कुछ विशेषज्ञों के अनुसार लगभग सभी महिलाओं में महावारी के कुछ न कुछ उत्तक वापिस पेट में जाते हैं और प्रतिरक्षा प्रणाली की खराबी या/और हॉरमोन सम्बन्धी खराबी के कारण ये वापिस मुड़े हुए उत्तक शरीर के किसी अंग में जड़ें जमा लेते हैं और बढ़ने लगते हैं, जिससे एण्डोमीट्रियोसिस बीमारी बन जाती है। एक–दूसरे सिद्धान्त के अनुसार एण्डोमीट्रियम उत्तक बच्चेदानी से शरीर के अन्य भागों में रक्त संचार या रक्त प्रणाली द्वारा बंटते हैं। एक अनुवांशिक सिद्धान्त के अनुसार यह बीमारी कुछ परिवारों के अनुवांशिक क्रम में ही होती है या कुछ परिवारों में इस बीमारी के लिए कुछ तत्व पहले ही उपस्थित रहते हैं।

एक अन्य सिद्धान्त के अनुसार भ्रूणावस्था के उत्तकों के अवशेष एण्डोमीट्रियोसिस का रूप ले लेते हैं। भ्रूणावस्था में उत्तकों में एक क्षमता रहती है कि वे किन्हीं परिस्थितियों में स्वयं को प्रजनन उत्तकों में परिवर्तित कर सकते हैं। एक मत के अनुसार प्रौढ़ावस्था में भी कुछ उत्तक इस क्षमता को बनाए रखते हैं और किसी भी अंग में बढ़ते हैं तो एण्डोमीट्रियोसिस हो जाता है। जिन मरीजों में एण्डोमीट्रियोसिस पेट की शल्य चिकित्सा वाले भागों में पाया जाता है उनमें इस बीमारी का कारण शल्य चिकित्सा प्रतिरोपण ही माना गया है। यद्यपि यह बीमारी ऐसे भागों में भी पायी गयी है जहाँ पर सीधे प्रतिरोपण की सम्भावना कम लगती है। इस संस्था तथा एण्डोमीट्रियोसिस पर शोधकर्त्ताओं द्वारा अन्य सिद्धान्त विकसित किए जा रहे हैं।

निदान

जब तक लैप्रोस्कोपी (पेट की दूरबीन से जांच) द्वारा सिद्ध नहीं हो जाए, एण्डोमीट्रियोसिस का निदान आमतौर पर अनिश्चित माना जाता है। लैप्रोस्कोपी मरीज को बेहोश करके की जाने वाली एक छोटी सी शल्य चिकित्सा है जिसमें मरीज के पेट को कार्बनडाइआक्साईड गैस द्वारा फुलाया जाता है ताकि लैप्रोस्कोप (दूरबीन–भीतर लाईट लगी हुई एक नली) द्वारा भीतर के अंगों को आसानी से देखा जा सके। पेट में एक छोटा सा चीरा देकर लैप्रोस्कोप को भीतर घुसाया जाता है। चिकित्सक यदि सावधानी और ध्यान से देखे तो लैप्रोस्कोप को पेट के अन्दर घुमाने से पेट के भीतर के अंगों की दशा और एण्डोमीट्रियम के प्रतिरोपणों को देख सकते हैं।

आमतौर पर एक चिकित्सक शरीर के निचले प्रजनन हिस्से का हाथ से मुआयना करके भी एण्डोमीट्रियम के प्रतिरोपणों को महसूस कर सकता है। मरीज के लक्षणों से भी एण्डोमीट्रियोसिस का पता चल सकता है। लेकिन चिकित्सा पुस्तकों के अनुसार इस बीमारी का इलाज निदान की पुष्टि किए बिना नहीं करना चाहिए। (उदाहरण के लिए अण्डाशय के कैंसर के लक्षण भी लगभग एण्डोमीट्रियोसिस जैसे ही होते हैं।) लैप्रोस्कोपी से इस विकृत वृद्धि की सही जगह, मात्रा और आकार का पता लग जाता है जिससे चिकित्सक और मरीज को स्पष्ट जानकारी के रहते, उपचार और गर्भधारण के बारे में दूरगामी निर्णय लेने में सुविधा रहती है।

उपचार

एण्डोमीट्रियोसिस के लिए भांति–भांति के उपचार किए गये हैं परन्तु कोई पक्का इलाज आज तक नहीं मिल पाया है। बच्चेदानी और अण्डाशय को निकालना इस बीमारी का पक्का इलाज माना गया है। परन्तु इस संस्था के शोध के अनुसार ऐसा करने पर भी बहुत से मरीजों में बीमारी बनी रहती है या पुन: हो जाती है। इन परिस्थितियों में महिलाओं को अपनी सुरक्षा के लिए बहुत सी बातों को जान लेना आवश्यक है। (स्थान की कमी के कारण यह जानकारी विस्तार से नहीं दी जा सकती – कृपया संस्था का अन्य साहित्य देखें।) एण्डोमीट्रियोसिस के दर्द के लिए आमतौर पर दर्द निवारक दवा दी जाती है। हॉरमोन उपचार का उद्देश्य, अधिकाधिक समय तक डिम्बक्षरण रोकना है। हॉरमोन उपचार से कई बार उपचार के दौरान और महीनों या वर्षों बाद तक भी, एण्डोमीट्रियोसिस की बीमारी कुछ दब जाती है। हॉरमोन उपचार में खाने वाली गर्भ निरोधक गोलियां, प्रोजैस्टीरॉन हारमोन, टेस्टोस्टीरॉन सजाति (डैनाजॉल) और जी.एन.आर.एच. (प्रजनन हॉरमोन गोनॉडोट्रोपिन छोड़ने की औषधि) शामिल हैं। कुछ महिलाओं में सभी तरह के हॉरमोन उपचारों के कुप्रभाव देखे गये हैं।

चूंकि गर्भावस्था में प्राय: इस बीमारी के लक्षण अस्थायी रूप से दब जाते हैं और चूंकि ऐसा मत है कि लम्बे समय तक इस बीमारी के रहने से बांझपन की सम्भावना अधिक हो जाती है, अत: इस बीमारी से ग्रस्त महिलाओं को अकसर जल्दी गर्भधारण की सलाह दी जाती है। यद्यपि एण्डोमीट्रियोसिस के उपचार हेतु गर्भधारण के नुस्खे में कई समस्याएं रहती हैं जैसे महिला अभी बच्चे पैदा करना नहीं चाहती है, चूंकि यह जीवन का एक बहुत महत्वपूर्ण निर्णय है या उसके पास बच्चा पालने व बड़ा करने का साधन न हो और यह भी हो सकता है कि वह पहले ही बांझ हो गयी हो।

गर्भधारण का निर्णय कुछ अन्य कारणों से भी बहुत कठिन हो सकता है जैसे एण्डोमीट्रियोसिस वाली महिलाओं में बच्चेदानी के बाहर गर्भ ठहरना, गर्भ का गिरना, कठिन गर्भावस्था और प्रसव आदि, अधिक होते हैं। शोध से यह भी पता चला है कि एण्डोमीट्रियोसिस की बीमारी परिवार से भी जुड़ी हुई है। अत: इस बीमारी के मरीजों के बच्चों में इस बीमारी के होने व इससे जुड़ी कुछ स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्या होने का खतरा अधिक बना रहता है।

आप अधिक जानकारी कैसे प्राप्त कर सकते हैं

बड़े ऑपरेशन या लैप्रोस्कोपी शल्य चिकित्सा से रसौली आदि को नष्ट करके या हटा करके भी बीमारी के लक्षणों से छुटकारा मिल जाता है और कुछ मरीजों को गर्भधारण की सलाह दी जाती है। जैसा कि दूसरे इलाजों में होता है, यह बीमारी अक्सर दोबारा हो जाती है। पेट को खोलकर की जाने वाली मूलभूत शल्य चिकित्सा की जगह अब लैप्रोस्कोप से शल्य चिकित्सा की संख्या बढ़ रही है। लम्बी व तकलीफ–देह बीमारी के मरीजों में बच्चेदानी, अन्य सभी गांठे/रसौलियों व अण्डाशयों (भविष्य में हॉरमोन द्वारा बीमारी को बढ़ने के रोकने हेतु) को निकालना आवश्यक हो जाता है।

ऐसा विश्वास है कि हल्की या औसत एण्डोमीट्रियोसिस बीमारी रजोनिवृत्ति से समाप्त हो जाती है, यद्यपि उस अवस्था की महिलाओं में शोध बहुत ही कम हुआ है। गम्भीर मरीजों में मूलभूत शल्य चिकित्सा व रजोनिवृत्ति के बाद भी यह बीमारी पुन: उठ खड़ी होती है जिसके कारण हैं : रजोनिवृत्ति के बाद भी हॉरमोन का बनते रहना, या ईस्ट्रोजन नामक हॉरमोन का प्रतिस्थापन इलाज। कुछ विशेषज्ञों का मत है कि बच्चेदानी व अण्डाशय को निकालने के बाद थोड़े समय तक कोई भी प्रतिस्थापन हॉरमोन नहीं देना चाहिए।

एण्डोमीट्रियोसिस के विविध वैकल्पिक इलाजों में पोषण विधि, पारम्परिक चीनी चिकित्सा व एलर्जी नियंत्रण तकनीक आदि अपनाए जा रहे हैं जिनकी सफलता की मात्रा भिन्न भिन्न है।

एण्डोमीट्रियोसिस के बारे में ज्ञान

एण्डोमीट्रियोसिस निसन्देह अति बोखलाने वाला महिला रोग है। जैसे–जैसे इस बीमारी के बारे में ज्ञान बढ़ रहा है विगत की कुछ मान्यताएं गलत प्रमाणित हो चुकी है या शंका के घेरे में आ गयी हैं। एक पूर्वधारणा थी कि अश्वेत महिलाओं में प्राय: एण्डोमीट्रियोसिस नहीं होता जो कि अब झूठ सिद्ध हो चुकी है। ऐसी धारणा बनने का कारण यह रहा हो कि अश्वेत महिलाओं को पहले इस हद तक चिकित्सा सुविधा ही उपलब्ध नहीं थी कि उनकी इस बीमारी का निदान हो सकता।

एण्डोमीट्रियोसिस के बारे में एक भ्राति थी कि बहुत छोटी उम्र की महिलाओं में यह बीमारी नहीं होती। इस धारणा के बनने के पीछे यह कारण हो सकता है कि पुराने समय में किशोरियां महावारी के दर्द (जो प्राय: इस बीमारी का अग्रिम लक्षण हैं) को चुपचाप सह लेती थीं जब तक कि वह असहनीय न हो जाए और डाक्टरी जांच न करवानी पड़े। विगत में ऐसा विश्वास था कि एण्डोमीट्रियोसिस अधिकतर पढ़ी–लिखी महिलाओं में होता है। इस विचार के बनने का कारण यही है कि पढ़ी–लिखी महिलाएं उत्तम चिकित्सा प्राप्त करती थीं और अपनी बीमारी की व्याख्या के लिए उत्सुक भी रहती थीं।

एक और मान्यता इस बीमारी के बारे में यह बनी कि यह एक गम्भीर बीमारी नहीं है क्योंकि यह कैंसर जैसी घातक नहीं है। लेकिन जिस किसी ने भी एण्डोमीट्रियोसिस की बहुत से मरीजों से उनके अनुभव जानने की कोशिश की तो उन्हें मालूम हुआ है कि जहाँ कुछ मरीजों का जीवन इस बीमारी ने बहुत कष्टदायक नहीं बनाया, वहीं बहुत सी अन्य महिलाओं ने भयंकर पीड़ा, भावनात्मक दबाव, सामान्य काम–काज में बाधा और कभी–कभी आर्थिक व इंसानी रिश्तों में समस्याओं का सामना किया है। शायद शीघ्र ही इस जटिल बीमारी को समझकर सभी भ्रांतियों, पीड़ा और हतोत्साह को समाप्त कर सकेंगे जो कभी–कभी इस बीमारी के साथ जुड़े रहते हैं।

एण्डोमीट्रियोसिस संगठन कैसे सहायता कर सकता है ?

एण्डोमीट्रियोसिस संगठन इस बीमारी से ग्रसित महिलाओं व इसके बारे में जानकारी के आदान–प्रदान में रूचि लेने वालों की एक स्वयंसेवी संस्था है। इस संस्था का उद्देश्य मरीजों को सहायता देना, परस्पर समर्थन के सूत्र बनाना, आम जनता व चिकित्सक समुदाय को शिक्षा देना और एण्डोमीट्रियोसिस से सम्बन्धित शोध को बढ़ावा देना है।

अकेलेपन को समाप्त कर, अपनी तकलीफ को समझने वालों के साथ मिल–जुलकर एण्डोमीट्रियोसिस के बारे में जानकारी की कमी व गलत धारणाओं को दूर कर और एक–दूसरे से सीखकर मरीज अपनी मदद कर सकते हैं।

यह एक अन्तर्राष्ट्रीय संस्था है जिसका मुख्यालय मिलवाकी, विसकान्सिन (अमेरिका) में है और इसकी सदस्यता व गतिविधियाँ अनेक देशों में फैल रही हैं। चुने हुए अधिकारी, चिकित्सकों के एक सलाहकार बोर्ड की सहायता व सुझावों से, संगठन का मार्गदर्शन करते हैं। इस संगठन की स्थापना वर्ष 1980 में मिलवाकी में सुश्री मेरी लॉ बालवेग और केरोलिन कीथ द्वारा की गई और एण्डोमीट्रियोसिस के मरीजों की सहायतार्थ यह विश्व का प्रथम दल बना।

संगठन के कार्यक्रमों से महिलाओं व उनके परिवारों को विविध सेवाएं प्राप्त होती हैं। यह सेवाऐं हैं : समर्थक समूह, औपचारिक व अनौपचारिक परामर्श/संकट में सहायता, सम्पर्क बनाना और एण्डोमीट्रियोसिस की मरीज महिलाओं को इस बीमारी का सामना करने के लिए अन्य सहायता। स्थानीय स्तर पर बैठकें व कार्यक्रम प्रत्येक समूह की इच्छा व आवश्यकतानुसार नियोजित किए जाते हैं। आमतौर पर बैठकें इस तरह से नियोजित होती हैं ताकि इस बीमारी के बारे में अनौपचारिक रूप से जानकारी बांटी जा सके और इससे उठने वाली समस्याओं का सामना करने के लिए समर्थन व सहायता दी जा सके। कुछ बैठकों में विशेषज्ञ इस बीमारी, स्वावलम्बन व अपनी देख–रेख,बांझपन,आयुर्विज्ञान शोध आदि के बारे में जानकारी देने के लिए बुलाये जाते हैं। सामूहिक कार्यक्रमों में धन एकत्रित करना और विभिन्न समुदायों को इस बीमारी के बारे में शिक्षा देना आदि शामिल हैं।

शिक्षा कार्यक्रमों के अन्तर्गत विविध साहित्य, पुस्तकें, वीडियों और ऑडियो टेप आदि उपलब्ध कराए जाते हैं ताकि व्यक्ति, जनसाधारण और चिकित्सक समुदाय को इस बीमारी के बारे में ज्ञान दिया जा सके। संगठन के सदस्यों को एक लोकप्रिय समाचार–पत्रिका द्वारा आधुनिकतम इलाज, शेष समाचार और इस संगठन की गतिविधियों की जानकारी मिलती है। यह संगठन संचार माध्यमों और चिकित्सक समुदाय को इस बीमारी के बारे में सही जानकारी के प्रचार–प्रसार के बारे में भी लगातार मदद करता है।

यह संगठन शोध कार्यक्रम भी चलाता है जिसके अन्तर्गत डार्ट माउथ औषधि विद्यालय में एक विशेष कार्यक्रम और डॉयोक्सिन व एण्डोमीट्रियोसिस के बीच सम्बन्ध पर शोध जारी है। यह संगठन एण्डोमीट्रियोसिस सम्बन्धी जानकारी के लिए एक वितरण–केन्द्र का कार्य भी करता है। संगठन के साथ शोध में रूचि रखने वाले इसके मुख्यालय को लिखें। एण्डोमीट्रियोसिस संगठन के कार्य को जारी रखने हेतु आर्थिक सहायता बहुत आवश्यक है और सहायकों का आभार होगा।

आप अधिक जानकारी कैसे प्राप्त कर सकते हैं

इस संगठन के सदस्य बने। इस बीमारी से सम्बन्धित समस्याओं के बारे में जानकारी संगठन द्वारा रचित साहित्य से प्राप्त कर सकते हैं। यह साहित्य एक उत्कृष्ट एवं अति महत्वपूर्ण स्तर का होता है एवं इसमें विभिन्न जानकारियों के बारे में बताया गया है। संगठन द्वारा प्रकाशित पुस्तक "दि एण्डोमीट्रियोसिस सोर्स बुक" में इस बीमारी के बारे में अधिकृत जानकारी दी गयी है। संगठन की यह दूसरी पुस्तक है एवं इसमें 500 पृष्ठ हैं। इसे संगठन मुख्यालय से निम्न दरों पर प्राप्त किया जा सकता है, या किसी पुस्तकों की दुकान से भी प्राप्त कर सकते हैं।

अमेरिकी डालर – 14.95 प्रति पुस्तक

(2.75 अतिरिक्त डाक सेवा के लिये)

इस संगठन द्वारा प्रकाशित प्रथम पुस्तक पाँचवी बार मुद्रित हो रही है एवं इसका नाम "ओवर कमिंग एण्डोमीट्रियोसिस" है। विशेषज्ञों द्वारा पूर्ण जानकारी की शैक्षिक वीडियो टेप, पुस्तिकायें एवं समाचार पत्रिका भी इस संगठन के द्वारा उपलब्ध करायी जाती है। मुफ्त में वितरित केटेलोग (विशेष पुस्तिका) के लिये संगठन के मुख्यालय या दूरभाष या पत्र द्वारा सम्पर्क करें।

"यदि मुझे एण्डोमीट्रियोसिस है तो कैसे बताऊँ" नामक किट निम्न दरों पर उपलब्ध है –

अमेरिकी डालर 4.75 + 1.75 (डाक सेवा अतिरिक्त)

इस संगठन के सदस्य बनने के लिये इस पुस्तिका के साथ में संलग्न "सदस्यता फॉर्म" को भरकर इस संगठन के मुख्यालय के निम्न पते पर भेजे :–

"अन्तर्राष्ट्रीय मुख्यालय"

एण्डोमीट्रियोसिस संगठन,

8585 एन, 76 वां स्थान

मिलवाकी, विसकोनसिन 53223, अमेरिका

मुफ्त टेलीफोन सेवा त्र +1 414 355 2200

www.endometriosisassn.org

Email : endo@endometriosisassn.org

"International Headquarters"

Endometriosis Association

8585, N. 76th Place,

Milwaukee, Wisconsin 53223 U.S.A.

Tel. +1 414 355 2200

"आज ही सदस्य बने लाभ उठायें"

यह पुस्तिका निम्न देशों की भाषाओं में उपलब्ध है –

अंग्रेजी, स्पेन, फ्रांस, डच, चीन, ताईवान, जापान, जर्मनी, कोरिया, पोलैण्ड, इटली, पूर्तगाल, रूस, अरब, बुल्गारिया, क्रोसिया, डेनिश, फिन्नीश, ग्रीक, हेब्यू, हंगरी, लिथुनिया, मलेशिया, नार्वेजियन, पोलिश, टर्की, उक्रेनियन, फारसी एवं हिन्दी।

(C)2001, Endometriosis Association, Inc

Issued 1980 Revised 1982, 83, 86, 87, 89, 91, 92, 95, 96, 98, 99, 2000

एण्डोमीट्रियोसिस एसोसियेशन सदस्यता/दानकर्त्ता फॉम

नाम : --

पता:--

------------------------------पिन कोड --------------------

टेलीफोन (दूरभाष) : ------------------------------

शुल्क धनराशि अदायगी – 1. डिमांड ड्राफ्ट/चैक

2. क्रेडिट कार्ड द्वारा वीजा मास्टर कार्ड

कार्ड संख्या ----------------------अन्तिम दिनांक ---------------

मैं मेरे क्षेत्र में इस संगठन के चैप्टर (शाखा) की शुरूआत करना चाहता/चाहती हूँ। (यदि पहले से नहीं है) कृपया मुझे इसके दिशा निर्देश भेजें। (यदि पूर्व में ही यह शाखा है तो दिशा निर्देश नहीं भेजे जायेंगे। क्षेत्रीय सूची आपको भेजी जायेगी)

मैं एक "कॉनटेक्ट परसन" (सम्बन्धित व्यक्ति) के रूप में सेवा करना चाहता/चाहती हूँ। एण्डोमीट्रियोसिस के मरीज इस बीमारी की जानकारी एवं समर्थन के लिये मुझे फोन अथवा मिल सकती है।

मैं एण्डोमीट्रियोसिस की बीमारी से पीड़ित हूँ ☐ थी ☐ नहीं हूँ ☐

चैक/डिमाण्ड ड्राफ्ट निम्न नाम से बनायें

एण्डोमीट्रियोसिस संगठन, 8585, नं. 76वां स्थान, मिलवांकी,

डब्ल्यू आई – 53223, अमेरिका फोन – +1 414 355 2200, फेक्स – +1 414 355 6065

व www.endometriosisassn.org ई–मेल– endo@endometriosisassn.org

सदस्यता (केवल एण्डोमीट्रियोसिस के मरीजों के लिये)

1 वर्ष अमेरिकी डॉलर 35.00	कुल रकम ------------
2 वर्ष अमेरिकी डॉलर 60.00	कुल रकम ------------
3 वर्ष अमेरिकी डॉलर 105.00	कुल रकम ------------
(मुफ्त पुस्तक "ओवर कमिंग एण्डोमीट्रियोसिस" साथ में)	
5 वर्ष अमेरिकी डॉलर 140.00	कुल रकम------------
1 वर्ष सम्पूर्ण परिवार	कुल रकम------------
(किशोरियों की सूचना पुस्तिका के लिए अतिरिक्त अमेरिका डॉलर 15.00)	
एसोसियेट सदस्यता (एण्डोमीट्रियोसिस के मरीजों के अलावा)	
(चिकित्सक महिला केन्द्र, संस्थायें एवं अन्य व्यक्ति)	
1 वर्ष अमेरिकी डॉलर 40.00	कुल रकम ------------
2 वर्ष अमेरिकी डॉलर 70.00	कुल रकम ------------
3 वर्ष अमेरिकी डॉलर 120.00	कुल रकम ------------
(मुफ्त पुस्तक "ओवर कमिंग एण्डोमीट्रियोसिस" साथ में)	
5 वर्ष अमेरिकी डॉलर 160.00	कुल रकम ------------
अतिकरक्त डाक सेवा	
अमेरिकन डॉलर 10.00	कुल रकम------------

कार्यकर्ता पत्र

यह संगठन तीव्रता से वृद्धि कर रहा है। इस बीमारी के मरीजों की सहायता एवं समर्थन के लिये हम सभी सदस्यों की सेवायें चाहते हैं। हम आशा करते हैं कि प्रत्येक सदस्य हर महिने एक या दो घंटे इस बीमारी में मरीजों की सहायता करें। स्वयं सेवा, कार्य क्षेत्र की आवश्यकतानुसार की जा सकती है।

मैं निम्न समितियों द्वारा सहायता कर सकती/सकता हूँ
(क्षेत्रीय अथवा अन्य सेवाओं सहित)

- ☐ 1. अनुसंधान के क्षेत्र में
- ☐ 2. नयी सदस्यता द्वारा
- ☐ 3. आय के श्रोत बढ़ाकर
- ☐ 4. पुस्तकालय द्वारा
- ☐ 5. कार्यक्रमों द्वारा
- ☐ 6. सामाजिक शिक्षा
- ☐ 7. आपातकालीन समय में
- ☐ 8. लेखन द्वारा

मैं समिति द्वारा सेवा करने में असमर्थ हूँ
लेकिन क्षेत्रीय स्तर पर सहायता कर सकता/सकती हूँ।

- ☐ 9. चिकित्सक के द्वारा मरीजों को जानकारी देना
- ☐ 10. बातचीत के दौरान एक संयोजक के रूप में
- ☐ 11. अन्य सदस्यों से सम्पर्क करना
- ☐ 12. टाइपिंग
- ☐ 13. जिरोक्सिंग/फोटो कापी करना
- ☐ 14. पत्राचार में सहायता करना।